शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राम कथा की अभिशप्त नायिका कैकई : एक अनुशीलन

मृत्युंजय कुमार चौरसिया (शोधार्थी)
प्रो अखिलेश कुमार शर्मा (निर्देशक)
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत
संपर्क.6394345386

शोध संक्षेप

देवताओं को अजेय करने हेतु जब समुद्र मंथन किया गया। उस समुद्र मंथन से उत्पन्न हलाहल विष को जगत के कल्याणार्थ महादेव ने अपने कंठ में धारण किया। उसी प्रकार कैकई ने राम को चौदह वर्षों के लिए वन में भेज कर असुरों का वध करवाया तथा ऋषि-मुनियों एवं राक्षसों से त्रस्त प्रजा की रक्षा की। यदि राम वन नहीं जाते तो यह अभीष्ट कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता। कैकेई ने सारे आरोपों की चिंता न करते हुए राम को वन भेजा। राम कथाओं में कैकेई एक पतिहंता पत्नी, राम-सीता एवं लक्ष्मण को वन में भेज कर नाना प्रकार के कष्ट देने वाली विमाता, अपने पुत्र भरत को उदासीन जीवन जीने के लिए अभिशप्त करने वाली मां, उर्मिला को पति वियोग देने और सामाजिक रूप से स्वयं के लिए वैधव्य और अपयश चुनने वाली स्त्री के रूप में परिभाषित की गई है किंतु ध्यान से चिंतन मनन किया जाए तो राम कथा में कैकेई के समान उच्च आदर्श अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहा। किसी लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति को जीवन में यदि सबसे ज्यादा कुछ प्रिय है तो उसकी प्रतिष्ठा है। प्रतिष्ठा व्यापक संदर्भ में वह स्थिति है जिसके द्वारा उसे वर्तमान में पहचान एवं सम्मान और भविष्य में याद किया जाता है। कैकेई के दो वरदानों ने उसकी प्रतिष्ठा को सामाजिक दृष्टि से अपूरणीय क्षति पहुंचायी है। विभिन्न दृष्टिकोण से विचार करने पर कैकेई का चरित्र अत्यंत उज्ज्वल लोक हितकारी और रामराज्य की स्थापना की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ही है।

बीज शब्द : *कैकेई, वन, प्रतिष्ठा, दानव, आत्म-संयम, दशरथ, मस्तिष्क, एकांतिक, राम, कल्याण, शाश्वत*

भूमिका

कैकई, कैकेय नरेश अश्वपति की पुत्री थी। जब राजा दशरथ की सेना के सम्मुख अश्वपति की सेना परास्त हो गयी, तब कैकेई अपने परिवार तथा देश को बचाने के लिए राजा दशरथ से राजनैतिक विवाह के लिए तैयार हुई। आधुनिक युग की भांति पूर्व में भी कन्याएं एक परिवार से दूसरे परिवार तथा एक राज्य से दूसरे राज्य को जोड़ने हेतु सेतु का कार्य करती थीं। कैकई के कन्यादान से पूर्व कैकेय नरेश ने सम्राट से वचन लिया था कि कैकेई का पुत्र ही अयोध्या का युवराज होगा। दशरथ ने तत्काल वचन दे दिया था। कैकेय मानव वंश की स्त्री-विरोधी मर्यादाओं से अनजान, स्वच्छंद वातावरण में पली राजकुमारी थी। जब कभी राजा दशरथ रणक्षेत्र में जाते तो वह अपनी सपत्नियों की भांति भगवान विष्णु के सम्मुख अपने पति की रक्षा की प्रार्थना नहीं करती थी। वह युद्ध की बात सुनते ही कवच पहन पति के साथ चलने को प्रस्तुत हो जाती।

कैकई विभिन्न शस्त्रों का संचालन करने में दक्ष थी। वह घुड़सवारी में भी प्रवीण थी। वह कौशल राज्य के सबसे अच्छे सारथी से रथ-संचालन की प्रवीणता में टक्कर ले सकती थी। शंबर के साथ हुए युद्ध में तो उसने अपने रथ-संचालन की कुशलता से राजा दशरथ के प्राण बचाए थे। उस समय अयोध्या के प्रत्येक नागरिक की जुबान पर यही था कि यदि कैकेई न होती तो सम्राट का बचना मुश्किल था।

राम का राजतिलक और कैकई का वरदान

जब मंथरा कैकेई को राम के राजतिलक की सूचना देती है, तब कैकेई अत्यंत प्रसन्न होती है और मंथरा को सोने का हार देती है। किंतु मंथरा उसे लेने से इनकार करती है तथा राजा के षड्यंत्रों से आगाह करती है। मंथरा, भरत के लिए राजपाट की मांग करती है। कैकेई भड़क जाती है :

"मुझको समान है राम-भरत एक ही पेड़ की शाखें हैं।
मुझ चिड़िया के दो पर हैं दोनों ही मेरी आंखें हैं।।
यदि भरत राम-सा प्यारा है तो राम भरत-सा प्यारा है।
गोदी का भरत दुलारा है तो राम नयन का तारा है।।"[1]

कोप भवन में कैकेई राम से कहती है, "सम्राट ने एक वचन मेरे पिता को दिया था उसकी चर्चा मैं नहीं कर रही, किंतु मेरे उपकार के बदले शंबर युद्ध के पश्चात उन्होंने दो वर मुझे दिए थे। आज मैं वे वरदान मांग रही हूं और ये सूर्यवंशी सहर्ष वरदान देने के स्थान पर रात भर इसी प्रकार भूमि पर पड़े दीर्घ नि:श्वास छोड़ते रहे हैं।"[2] कैकेई अपने दांपत्य जीवन से कभी संतुष्ट नहीं थी। वह अयोध्या में घुट-घुट कर जी रही थी। कोप भवन में राम से कहती है, "मैं वह धरती हूं राम! जिसकी छाती करुणा से फटती है तो शीतल जल उमड़ता है, घृणा से फटती है तो लावा उगलती है। दोनों मिल जाते हैं तो भूचाल आ जाता है! आज मेरी स्थिति भूडोल की है राम!"[3] राजा दशरथ कैकेई से वय में बहुत बड़े थे। अनमेल विवाह में प्रेम नहीं स्वार्थ छिपा होता है। इतिहास गवाह है कि अनमेल विवाह विरले ही सफल हुए हैं। कैकेई भी इस अनमेल विवाह से असंतुष्ट थी। कैकेई के शब्दों में "मैं इस घर में अपने अनुराग का अनुसरण करती हुई नहीं आयी थी। मैं पराजित राजा की ओर से विजयी सम्राट को संधि के लिए दी गयी एक भेंट थी। सम्राट और मेरी वय का भेद आज भी स्पष्ट है। मैं इस पुरुष को पति मान पत्नी की मर्यादा निभाती आई हूं, पर मेरे हृदय में इनके लिए स्नेह का उत्स कभी नहीं फूटा। ये मेरी मांग का सिंदूर तो हुए अनुराग का सिंदूर कभी नहीं हो पाए।"[4]

राज प्रसाद में कैकेई को सदैव संदेह की दृष्टि से देखा गया। कैकेय के शब्दों में, "इस राजप्रसाद में मुझ पर कभी विश्वास नहीं किया गया। मुझे सदा चुड़ैल समझ गया। मेरे भाई को आतंक माना गया। मेरे मायके की परंपराओं को हीन और घृणित कहा गया। मैं सदा यहां अपरिचित होकर रही।"[5] कैकेयी अपने पति के झूठ से पीड़ित थी। कैकेई अपनी सपत्नियों से कभी घृणा नहीं करती थी। वह राम से कहती है, "शिकायत है अपने इस पति से जो बलपूर्वक मुझसे विवाह कर मुझे यहां लाया। जिसने अयोग्य होते हुए भी मुझसे सद्भावना चाही और प्राप्त की, किंतु स्वयं मेरे प्रति घोर दुर्बलता का अनुभव करते हुए भी मुझ पर कभी विश्वास नहीं किया। मैं उसके लिए आकर्षण किंतु भय की वस्तु रही। उसने मुझे अपने सिंहासन पर तो स्थान दिया किंतु हृदय में नहीं।"[6]

पति-पत्नी के झगड़े का प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है। कैकेय अपने पुत्र भरत को हमेशा ननिहाल ही भेजे रहती थी, "हमारी रातें प्यार-मनुहार में कटने के स्थान पर झगड़ों और लानत-मलानत में बीत जाती थी। बार-बार संकल्प करने के बाद भी झगड़े होते रहे। कलह-क्लेश शांत ही नहीं हुए। पति-पत्नी के इन झगड़ों के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए उसे एक शांत और स्नेहिल वातावरण देने के लिए मैं भरत को बार-बार उसके ननिहाल भेजती रही।"[7]

राजा दशरथ ने भी राम के राज्याभिषेक में काफी जल्दबाजी दिखाई। राजा दशरथ ने कैकेय से इस संदर्भ में तनिक भी राय नहीं ली, जबकि वे वचनबद्ध थे कि सिंहासन पर भरत बैठेगा। उस समय रानी कैकेई की शक्ति को कम करने के लिए विभिन्न दुष्चक्र रचे गए। स्वयं कैकेई के शब्दों में, "भरत को ननिहाल भेज दिया गया। भरत की अधीनस्थ टुकड़ियों को उत्तरी सीमांत की ओर स्थानांतरित कर दिया। पुष्कल का अपहरण करवा उसे बंदी कर लिया। कैकेय के राजदूत की निजी सेना का निःशस्त्रीकरण हुआ।"[8] कैकेई अपने विरुद्ध रची जा रही साजिशों से और भी भड़क उठी, थोड़ी है मेरी सद्भावना पर मेरे चरित्र की उदात्त स्वरूप पर यहां कोई मुझे देवी के रूप में नहीं देखना चाहता। सब मुझे चुड़ैल समझते हैं। मेरे क्रूर रूप को ही सत्य मानते हैं। तो वही हो, रामः वही हो।"[9] कैकेई को इस स्थिति में पहुंचाने के लिए कौशल्या का चरित्र भी एक कारण है। कौशल्या ने कभी भी कैकेई को बहन के समान नहीं समझा। वह भरत को राम के प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखती। जब राम को राज्यतिलक का समाचार उसने सुना तो अधिक प्रसन्न हुई। क्योंकि जब उसका पुत्र राम अधिकार प्राप्त कर लेगा तो कैकेई से भय समाप्त हो जाएगा। कौशल्या के भयमुक्त होने का समाचार कौशल्या की दासियां मंथरा तक पहुंचा देती हैं। जिससे मंथरा कुपित होकर कैकेई के कान भरती है। कैकेई स्वयं कहती है, "सम्राट के अविश्वास ने मेरे चरित्र के दुष्ट तत्वों को उकसा दिया है, मेरी प्रतिहिंसा और घृणा को जगा दिया है मैं सम्राट को इसका दंड दूंगी, ऐसी आग लगाऊंगी कि आग बुझ भी जाए तो उसकी लहर समाप्त न हो। सम्राट को जलाऊंगी, चाहे उस अग्नि में स्वयं जल जाना पड़े।"[10]

राम भी वही चाह रहे थे, जो कैकेई चाह रही थी। राम का मन कैकेई के प्रति आभार से आप्लावित हो उठा। राम जल्द से जल्द वन जाना चाहते थे। उनके पास यही एक अवसर था। यदि वे चूक गए तो फिर ऐसा मौका पुनः नहीं आएगा। राजा दशरथ में यदि तनिक भी आत्मबल जाग उठा और उन्होंने कह दिया कि वह कैकेई को वरदान नहीं देंगे, राम वन नहीं जाएंगे तो फिर राम की चिंता पुनर्जीवित होकर उनके मार्ग में आ खड़ी होगी। कैकेई की इच्छा थी की राम दंडक वन से अपना अभियान आरंभ कर सकते हैं। दंडक वन भयंकर राक्षसी सेनाओं, हिंस्त्र पशुओं तथा अनेक अत्याचारियों से भरा पड़ा है। दंडक वन में ही शंबर का सामना करते हुए दशरथ के प्राणों की रक्षा कैकेई ने की थी। उनकी इच्छा थी कि राम के द्वारा शंबर के वंशजों का नाश हो।

कैकेई ने क्या-क्या कटु वचन और लांछन नहीं झेले। किसी मां के लिए उसके जाय बेटे के मुख से सुनने से ज्यादा पीड़ा पहुंचाने वाला और क्या हो सकता है ?

"जब तैं कुमति कुमत जियँ ठयऊ। खंड खंड होइ हृदउ न गयऊ।।
बर मागत मन भइ नहिं पीरा। गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा।।"[11]

इतना ही नहीं गुप्त जी ने 'साकेत' में कैकेई के मन की पीड़ा को अपनी पंक्तियों में अभिव्यक्ति देते हुए लिखा है :

"युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी,
रघुकुल में थी एक अभागिन नारी।
निज जन्म-जन्म में सूने जीव यह मेरा,
धिक्कार उसे था महास्वार्थ ने घेरा।।"[12]

कोई भी स्त्री सपत्नी के विषय में सपने में भी नहीं सोचना चाहेगी। कुटिल मंथरा ने सौतिया डाह का दांव फेंक कर कैकेई को अपने जाल में फंसा लिया। मंथरा कहती है :

"यदि तुम इस रण में हार गई तो भरत रहेगा दासों में।
रक्खेगी तुमको कौशल्या दासी समान रनिवासों में।।"[13]

कैकेई दूरदर्शी महिला थी। कैकेई चाहती तो राम को एक, दो, चार या आजीवन वनवास मांग सकती थी किंतु उसने चौदह वर्षों का ही वनवास मांगा :

"तापस वेष विसेषि उदासी। चौदह बरसि रामु वनवासी।।"[14]

अर्थात तपस्वियों के वेश में विशेष उदासीन भाव से, राज्य कुटुंब आदि की ओर से भलीभांति उदासीन होकर विरक्त मुनियों की भांति राम चौदह वर्ष तक वन में निवास करें। राजा की दृष्टि उसकी सोच और आचरण सम्यक् (समता मूलक) होना चाहिए। राम युवराज बनने जा रहे थे, अतः इस पद के लिए उनको भलीभांति प्रशिक्षित होना आवश्यक था, भले ही राम में सभी गुण सुलभ थे। उद्देश्य के शाश्वत होने पर भी कुमति मंथरा के संपर्क से प्रेरित होकर कैकेई की जरा सी चूक भरत के लिए राज्य की मांग ने उसके सुफल पर प्रश्नचिन्ह लगाकर इतिहास में उसे कलंकित कर दिया। यह घटना हमें प्रतिपल सतर्क एवं विवेकशील बने रहने की प्रेरणा देती है। मानव के सारे क्रियाकलाप, व्यवहार, प्रकृति का निर्धारण मुख्यतः तीन बातों पर निर्भर करता है। प्रथम संवेदना की ग्राहिता, द्वितीय विश्लेषण, तृतीय क्रिया। इस संपूर्ण क्रिया का संचालन पांच ज्ञानेंद्रिय, कर्ण, त्वचा, चक्षु, रसना और नासिका एवं इन इंद्रियों के कार्य क्षेत्र शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध हैं। पांच कर्मेंद्रियां. वाक्, हस्त, पाद, उपस्थ् और गुदा एवं इन इंद्रियों के विषय के साथ-साथ मस्तिष्क द्वारा इंद्रियों के विषयों के विश्लेषण का आधार, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार पर निर्भर करता है।

इस तरह ये चौदह चीजें (पांच ज्ञानेंद्रियां, पांच कर्मेंद्रियां एवं मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का संचालन एवं नियमन करते हैं। अतः इनका सम्यक् एवं निरपेक्ष होना आवश्यक है। सामान्य व्यक्ति परिवार में रहकर यह सम्यक और निरपेक्षता हासिल नहीं कर सकता या ऐसा करना उसके लिए काफी कठिन है। वन का एकांतिक जीवन ऐन्द्रीक नियंत्रण एवं नियमन के लिए सबसे सही स्थान है। इसलिए ऋषि-मुनि कानन में तपस्या करते थे। उनका व्यक्तित्व विकसित होकर उदासीन हो जाता था। सामान्य व्यक्ति सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मा-अपमान, जीवन-मृत्यु के आसन पर बैठकर द्वंद्वमें फंसा रह जाता है और तदनुसार क्रिया-प्रतिक्रिया करता है। वह अपने कर्तव्य का भलीभांति निर्वाह कर नहीं पाता, जबकि उदासीन व्यक्ति इस सबसे ऊपर उठकर उन्नत आसन पर बैठा होता है। राम, कैकेई के लिए पुत्र के समान ही थे। अतः अयोध्या (जहां परस्पर किसी प्रकार का युद्ध या

द्वंद्व न होता हो) का राजा कम से कम दशरथ (जिसका दसों इंद्रियों पर नियंत्रण हो या जो दशरथी, दसों इंद्रियों पर आरूढ़ हो) की तरह या उनसे श्रेष्ठ हो। साथ ही इंद्रियों के विषयों का मस्तिष्क के स्तर पर मनुष्य के मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का विचार कर इंद्रियों द्वारा उनका संचालन आवश्यक है। ऐसा होने पर ही व्यक्ति का क्रोध सद् उद्देश्य, लोभ सद् अनुराग, मोह सद् उत्साह और अहंकार आत्माभिमान के रूप में विकसित हो पाता है। इन्हीं आत्मसंयम के गुणों से विभूषित करने के लिए चौदह वर्ष के वनवास में 'चौदह' की संख्या का प्रतीकात्मक महत्त्व समझ में आता है।

अतः जो व्यक्ति इन चौदह का नियंत्रण साध लेगा, उसके अंदर का रावण अपने आप मर जाएगा। अतः रावण की उम्र इन चौदह के साधने तक ही है। इन चौदह पर नियंत्रण के बाद व्यक्ति का स्वयं रूपांतरण हो जाएगा। उसके गुण, कर्म और प्रकृति एकदम बदल जाएंगे। राम, कैकेई के इस मंतव्य या हेतु को जानते थे। दशरथ का इंद्रियों पर तो नियंत्रण था, किंतु मस्तिष्क द्वारा विश्लेषण में कहीं चूक हुई थी। उनका राम के प्रति लगाव मोह में बदल गया था। संगत का प्रभाव कितना घातक होता है, कैकेई ने बाद में पश्चाताप करते हुए कहा था :

"मंथरा रांड की संगति से हाए मैंने क्या उत्पात किया।
अपने ही हाथों से अपने बेटे पर वज्राघात किया।।
हे दुन्निया की बहनों सीखो ओछों को मुंह न लगाना तुम।
हे बहू-बेटियों नीचों की संगती में फंस मत जाना तुम।।
घर में जो दुष्ट दासियां है, वे स्वांग नित नये भरती हैं।
बर्बाद घरों की बहुओं को नाना प्रकार से करती हैं।।"[15]

राम के अवतार का उद्देश्य

"निसिचरहीन करऊं महि भुज उठाई पन किन्ह, सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाई सुखदीन्ह"[16] की प्रणपूर्ति के लिए किसी को तो निमित्त बनना ही था। कैकई ने स्वयं को निमित्त बनने के लिए तैयार किया।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि पौराणिक कथाओं का उद्देश्य मात्र लोगों का मनोरंजन करना नहीं है। महत् उद्देश्य, महत् योजना और महत् चरित्र के माध्यम से समाज को महत् संदेश देना है। इतना ही नहीं इसकी प्रेरणा भी महत् थी जिसे स्वयं ज्ञान की देवी मां सरस्वती ने मंथरा के माध्यम से कैकेई तक पहुंचाया था। लोकतांत्रिक व्यवस्था का अर्थ मात्र लोक लुभावन निर्णय लेना या लोगों को खुश करना नहीं है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का उद्देश्य है लोक एवं लोगों के कल्याण की महत् प्रेरणा और महत् उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा को होने वाली क्षति का विचार किए बिना कठोर एवं अप्रिय दिखाई देने वाले निर्णय लेने में बिना लाभ-हानि का विचार किये नि:संकोच दृढ़ता का भाव। राम कथा में कैकेई के चरित्र के माध्यम से कई स्त्री-विषयक समस्याओं का निराकरण हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 पं राधेश्याम कथा वाचक, राधेश्याम रामायण, राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली 1982 अयोध्या कांड पृष्ठ 9

2 नरेंद्र कोहली अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 226-27

3 नरेंद्र कोहली, अवसर, पराग प्रकाशन 1978, पृष्ठ 56
4 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 207
5 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 228
6 नरेंद्र कोहली, अवसर, पराग प्रकाशन, 1978, पृष्ठ 57
7 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 228-229
8 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 229
9 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 229
10 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय, 1 डायमंड पाकेट बुक्स, 2023, पृष्ठ 230
11 गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, 2022, पृष्ठ 434
12 मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, साहित्य सदन, झांसी, 1931, अष्टम सर्ग
13 पं राधेश्याम कथावाचक, राधेश्याम रामायण, राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, 1982 अयोध्या कांड पृष्ठ 10
14 गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2022, पृष्ठ 330
15 पं राधेश्याम कथावाचक, राधेश्याम रामायण, राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, 1982 अयोध्या कांड, पृष्ठ 18
16 गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, 2022, पृष्ठ 577